॥ ओ३म् ॥

(कृण्वन्तो विश्वमार्यम्)

आर्य समाज राँची द्वारा
प्रचारार्थ भेंट

संसार की अद्भुत पुस्तक

5284

बाईबल (धर्म शास्त्र) की अद्भुत बातें

प्रकाशक पं० गोविन्द प्रसाद आर्य "विद्यावारिधि" स्नातक
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (पंजाब)

23.5.66

प्रथम संस्करण [तीन हजार ३००० ।

5284

मूल्य ३० पैसे ।

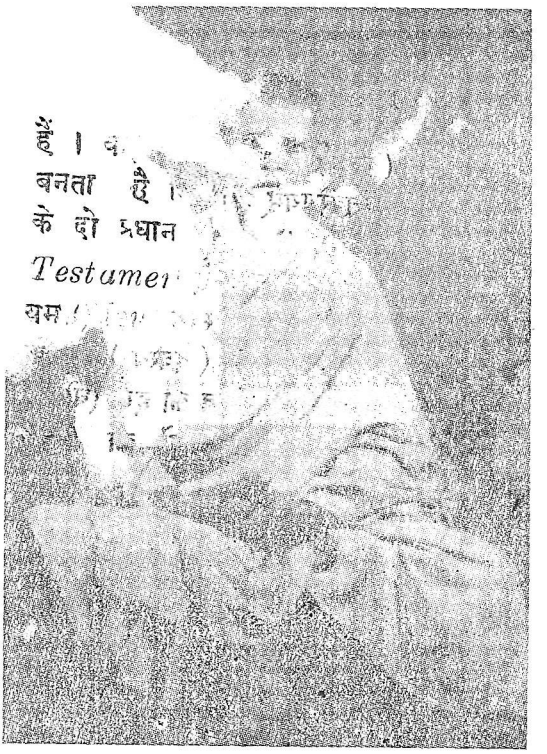

लेखक

स्वामी शिवानन्द तीर्थ, आचार्य शान्ति आश्रम (लोह

प्रकाशक

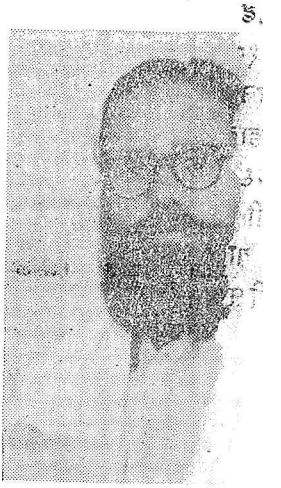

॥ ओ३म् ॥

गायत्री (गुरु) मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
धियोयो नः प्रचोदयात् ॥यजु० ३६।३॥

अर्थ— (ओ३म्) यह प्रभु का मुख्य नाम (
का प्राण (भुवः) दुःख निवारक (स्वः) सुख
उस, (सवितुः) सकल जगत् के उत्पादक
(वरेण्यम्) ग्रहण करने योग्य (भर्गः) विशुद्ध तेज
धारण करें। (यः) जो (नः) हमारा (धियः) बुद्धियाँ (प्रचो-
दयात्) सन्मार्ग में प्रेरित करें।

पूर्व वचन

बाईबल यहूदी और ईसाई लोगों का धर्म ग्रन्थ है।
इस को वे लोग पवित्र पुस्तक मानते हैं। मूल हिब्रु भाषा में
है जिसका अनुवाद सात सौ अन्य भाषाओं में हुआ है।
पुस्तक अपने वर्तमान रूप में सन् १६११ ई० में इंगलैंड
राजा जेम्स प्रथम के शासन काल में अंग्रेजी (*English*) में
इंगलैंड के पार्लियामेन्ट के तत्वाधान में छपी। संस्कृत में बाईबल
१८२२ ई० में छप गई थी। कलकत्ता चर्च मिशन छापाखाना
१८३४ ई० में तथा ब्रिटिश एण्ड फारेन बाईबल सोसाइटी
बाद द्वारा इलाहाबाद मिशन प्रेस से १६०५, १६०७,
१६१३, और १६३६ ई० में हिन्दी में छपी तथा छपती
है।

बाईबल के अनेक खण्डों का अनुवाद अवधी, ब्रजभाषा,
गढ़ी, दक्खिनी, कन्नोजी, मुण्डारी, उरांव आदि में हुए

प्र... यह लैटिन भाषा के विविलियां धातु से जिसका तात्पर्य पुस्तकों का समुह है। वाईवल खण्ड (भाग) है एक पुराना धर्म नियम(*Old-...nt*) हिब्रु (इबरानी) में और दूसरा नया धर्म नि-...*stam*ents) यूनानी में है नया धर्म नियम को ...ते हैं। इञ्जील हिन्दी में सुसमाचार और ... स्क्रीपचर,, है। संस्कृत में भी मति मरकुस ... योहन्ना रचित इञ्जोल का पद्यानुवाद (श्लोक-वाद्ध) ख्रीष्टोपनिबद नाम से सन् १६४४ ई० ताराचरण चक्रवर्ती तर्क दर्शन तीर्थ ने सम्पादित किया है और एन० रुद्र द्वारा रुद्र प्रीटिंग वर्कस ६ ए० सरकार बाईलेन कलकत्ता से प्रकाशित हुई। पुराने धर्म नियम से १४ पुस्तकें और नये से १४ पुस्तकों को सन्दिग्ध ठहरा कर निकाल दिया। वर्तमान हिन्दी की वाईवल जो विभिन्न समयों में भिन्न २ प्रेसों से छपी है. उनमें पहले खण्ड में इस समय ३६ पुस्तकें और दूसरे खण्ड में २७ पुस्तकें कुल मिलाकर ६६ पुस्तकें प्रोटेस्टेन्ट तथा कैथोलिक सम्पूर्ण वाईवल में मानते हैं। हरएक प्रकाशन में कुछ न कुछ आरम्भ से ही परिवर्तन तथा अन्तर होता गया है। वाईवल के पूर्व खण्ड में ईसा के पूर्व तक की घटना और उत्तर खण्ड में ईसा सम्बन्धी।

यह थोड़ा सा परिचय देने के बाद आगे इसकी सर्वश्रेष्ठता की परीक्षा की जाती है।

लेखक:-

प्रकाशक के दो शब्द

पूज्य स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ ने यह समीक्षा बड़े ही विचार एवं मनन के बाद लिखी है इसे बहुत दिनों से प्रकाशित करना चाहते थे लेकिन सुयोग वातावरण न मिला। मैंने इसे पढ़कर देखा तथा प्रकाशित करने का विचार किया। अतः यह ग्रन्थ आपकी सेवा में प्रस्तुत है। यदि पाठक इसे पढ़कर अपने विचार से अनुगृहित करेंगे तो उनकी महान कृपा होगी।

जैसा कि स्वामी जी ने भूमिका में लिखा है कि किसी को नीचा दिखाने के लिये यह नहीं लिखा जा रहा है बल्कि सत्यासत्य का प्रकाश एवं बिचार के लिये यह समीक्षा प्रस्तुत किया गया है। बाईबल का वास्तविक स्वरूप क्या है यह इस समीक्षा के पढ़ने से पता चल जायेगा। अतः पाठक निष्पक्ष भाव से इसे पढ़कर लाभ उठावेंगे। यदि किसी को इस ग्रन्थ रत्न से लाभ हुआ तो मेरा प्रकाशित करने का प्रयत्न सफल होगा। प्रभु से प्रार्थना है यह कार्य आगे बढ़े।

—पं० गोविन्द प्रसाद आर्य "विद्या वारिधि"

बाइबल की परीक्षा

यह परीक्षा बाईबल सोसाइटी आफ इन्डिया, पाकिस्तान एण्ड सिलोन एलाहाबाद द्वारा १६०७ और १६५० ई० के आधार पर हैं ये दोनो प्रकाशन के ग्रन्थ मेरे पास मौजुद है ।

ईसाइयों के विश्वास के अनुसार बाईबल पवित्र शास्त्र है जैसा कि बाईबल के नया नियम (इञ्जील) में लिखा है कि "पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी ...." (पतरस की दूसरी पत्री पर्व १ आयत २०,२१)

अब पवित्र शास्त्र (शर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ) बाईबल की परीक्षा से आप जांच करें कि यह कैसी है । जिस प्रकार वणिक लोग बोरा बन्द अन्य को बामा द्वारा उसके अच्छे बुरे की पहिचान कर लेते हैं ऐसे ही मैं भी आपके समक्ष कुछ आयते पेश करता हूँ ।

१ ईश्वर(यहोवा)का झूठ बोलना

.... परमेश्वर ने .... वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले बुरे ज्ञान के वृक्ष को भी उगाया। .... जब यहोवा परमेश्वर ने "आदम" को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया कि वह उसमे काम करे और उस की रक्षा करे, तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि तू वाटिका के सब वृक्षों का बिना खटके खा सकता है पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू न खाना ; क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खायेगा उस दिन अवश्य मर जायगा ।(उत्पति प० २। १५ से १७ तक) फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा आदम

को अकेला रखना अच्छा नहीं है। मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊ जो उससे मेल खाये।---।

आदम को भारी नींद में डाल दिया और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकाल कर उसकी सन्ती मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उसने आदम में से निकाली थी स्त्री बना दिया और उसको आदम के पास ले आया। २० प- २१ – २५ - ----आदम और उसकी पत्नी दोनो नंगे थे पर लजाते न थे।

यहोवा परमेश्वर ने जिसने वन्य पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धुर्त था और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? स्त्री ने सर्प से कही, इस वाटिका के वृक्षों का फल खा सकते हैं। पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा कि न तो तुम उसको खाना, न छुना नहीं तो मर जाओगे। तब सर्प ने कहा तुम निश्चय न मरोगे, वरन परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उस दिन तुम्हारी आँखे खुल जायगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे तब उसने उस में से तोड़कर खाया और अपने पति को भी दिया और उसने भी खाया। तब उन दोनो की आँखे खुल गई और उसको मालूम हुआ कि वह नंगे हैं, सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़कर लंगोट बना लिए.... परमेश्वर वाटिका में फिरता था, उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्ष के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गये। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम से पुकार

कर कहा- कि तू कहाँ है। उसने कहा मैं तेरा शब्द सुनकर डर गया। क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए छिप गया*, उसने कहा *किसने तुझे चिताया कि तू नंगा है।* जिस वृक्ष का फल खाने को मैंने तुझे वर्जा था, क्यों तूने उसका फल खाया है? आदम ने कहा ··· स्त्री ने मुझे दिया है ······ परमेश्वर ने स्त्री से कहा तू ने यह क्या किया है। स्त्री ने कहा मुझे सर्प ने बहका दिया तब मैंने खाया ······ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया। इसलिए अब ऐसा न हो कि हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का भी फल तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे तब यहोवा परमेश्वर ने अदन की वाटिका से निकाल दिया ·········उत्पति पर्व २ और ३

समीक्षा:— ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो उस धूर्त सर्प को अर्थात् शैतान को क्यों बनाता? और जो बनाया तो वही ईश्वर अपराध का भागी है क्योंकि जो वह दुष्ट न बनाता तो वह दुष्ट क्यों बनता? और वह पूर्व जन्म नहीं मानता तो बिना अपराध के उसको पापी क्यों बनाया और सच पुछो तो वह सर्प नहीं था किन्तु सर्प (नाग) जाति का जो, इस समय संथाल उरॉव आदि नाम से प्रसिद्ध हैं। सर्प के पूर्वज मनुष्य था क्योंकि जो मनुष्य न होता तो मनुष्य की भाषा क्यों कर बोल सकता था। जो आप झूठा और दूसरे को झूठ में चलावे उसको शैतान कहना चाहिए सो यहां शैतान सत्य वादी और उसने स्त्री को नहीं बहकाया किन्तु सच कहा और ईश्वर ने आदम और हव्वा से झूठ कहा कि इसके खाने से तुम मर जाओगे। जब वह पेड़ ज्ञान दाता और अमर करने वाला था

तो उसके फल खाने से क्यों वर्जा ? और वर्जा तो वह ईश्वर झूठा और बहकानेवाला ठहरा। क्योंकि उस वृक्ष के फल मनुष्यों के ज्ञान और सुख कारक थे अज्ञान और मृत्यु कारक नहीं। जब ईश्वर ने फल खाने से वर्जा तो उस वृक्ष की उत्पत्ति किसलिये की थी ? जो अपने लिए भी तो क्या आप अज्ञानी और मृत्यु धर्म वाला था ? और जो दूसरों के लिए बनाया तो फल खाने में अपराध कुछ भी नहीं हुआ और आजकल कोई भी वृक्ष ज्ञान कारक और मृत्यु निवारक देखने में नहीं आता है, क्या ईश्वर ने उसका बीज नष्ट कर दिया ? ऐसी बातों से मनुष्य छली कपटी होता है तो ईश्वर वैसा क्यों न हुआ क्योंकि जो दूसरो से छल कपट करेगा वह छली कपटी क्यों न होगा। और जो वह तीनों को शाप दिया वह विना अपराध में है। पुनः वह ईश्वर अन्याय कारी भी हुआ और वह शाप ईश्वर को होना चाहिये क्योंकि वह झूठ बोला और उसको बहकाया।

असत्य भाषण का आदेशः—

(१) निदान एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई और कहने लगी मैं उसको बहकऊंगा, यहोवा ने पूछा किस उपाय से ? उसने कहा, मैं जा के सब भविष्य वक्ताओं में पैठ कर उससे झूठ बुलवाऊँगी, यहोवा ने कहा, तेरा उसको बहकाना सुफल होगा, जाकर ऐसा ही कर

(राजाओं के वृतान्त भाग १ पर्व २२ आयत २१-२२

समीक्षाः—"नहिं सत्यात्परोधर्मः, नानृतात्पातकंपरम्,,

सत्य से बढ़कर धर्म नहीं और झूट से बढ़ कर पाप नहीं

कहा यह सिद्धान्त और कहां झूठ बोलने का सिद्धान्त और शिक्षा, इसीलिये पादरी लोग झूठ बोलकर भोले-भाले लोगों को अपने चंगुल में फंसा ईसा के भेड़ों की संख्या बढ़ाते हैं।

मनुष्य की विष्ठा से रोटी पकाना :—

ईसाइयों का ईश्वर यहोवा कहता है—"और अपना वह भोजन जब की रोटियोंकी नाईं बनाकर खाया करना और उसको मनुष्य की विष्ठा से उनके देखते बनाया करना। फिर यहोवा ने कहा.....मैंने तेरे लिए मनुष्य की विष्ठा की सान्ती गोबर ठहराया है सो तू अपनी रोटी उसी से बनाना,,

(यहेज केल पर्व ४ आयत १२, १३, १५)

समीक्षा:—यह कितना घृणित कार्य है, क्या मनुष्य की विष्ठा पर रोटी पकाने से अधिक स्वादिष्ठ होती है संसार के पादरी बतावे कि इसमें क्या वैज्ञानिक रहस्य है, ऐसे ही पवित्र पुस्तक की शिक्षा का प्रचार पवित्र आर्यावर्त में प्रचार करना चाहते हैं। इस आयत के आधार पर प्रत्येक ईसाइ को मानव विष्ठा से रोटी पका-कर खानी चाहिये।

चोरी की आज्ञा: जब तुम निकलोगे तब तुम छूछे हाथ न निकलोगे वरन तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसिन और अपने २ घर की पाहुनी से सोने चाँदी के गहने और वस्त्र माँग लेगी और तुम उन्हें अपने बेटे और बेटियों को पहिराना, इस प्रकार तुम मिश्रियों को लूटोगे।

(निर्गमन पर्व ३ आयत २१ २२)

और इस्राइलियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिश्रियों से सोने चाँदी के गहने और वस्त्र माँग लिए.....

इस प्रकार इस्राइलियों ने मिश्रियों को लूट लिया।

(निर्गमन पर्व १२ आयत ३५, ३६)

जब वे यरूशलम के निकट पहुँचे और जैतुन पहाड़ पर बैतफगे के पास आये तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा कि अपने सामने के गाँव में जाओ वहाँ एक गदही बन्धी हुई और उसके साथ एक बच्चा तुम्हें मिलेगा उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ यदि तुम से कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभु को इसका प्रयोजन है। (मति रचित सुसमाचार पर्व २१ आयत १, २, ३)

समीक्षा:——चोरी का आदेश देने वाला और चोरी करने वाला दोनों दण्ड के भागी हैं कि नहीं ? जब बिना स्वामी के, पीछे किसी की वस्तु लेना चोरी है, तब मूसा का इस्राइलियों से मिश्रियों का लुटवाना और ईसा का चेलों से बच्चा सहित गदही खुलवाना कैसा काम है ? विचारे.....

१ व्यभिचार अपनी कन्या से विषय (भोग) करने में कोई दोष नहीं :——यदि कोई समझे कि मैं अपनी कन्या से अशुभ काम करता हूँ, जो वह स्यानी हो और ऐसा होना आवश्यक है तो वह जो चाहता है सो करे, उसे पाप नहीं, वे विवाह करें, (इलाहाबाद मिशन प्रेस १६०७ ई० की छपी पृष्ठ सं० १६५ कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहली पत्री पर्व ७ आयत ३६)

इसी प्रकार १६०७ की उक्त प्रेस से छपी में इसी प्रकार का

पाठ है, किन्तु १६५० ई० में ईसाइयों ने बदल कर पाठ इस प्रकार कर दिया है—यथा—और यदि कोई यह समझे कि मैं अपनी उस कुवारी का हक मार रहा हूँ, जिसकी जवानी ढल चली है और प्रयोजन भी होय तो जैसा चाहे वैसा करे, इसमें पाप नहीं वह उसका व्याह होने दें।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री पृ० १५० पर्व ७ आयत ३६)

समीक्षाः—अर्थ स्पष्ट है इस पर टीका टिपण्णी करना व्यर्थ है विज्ञजन भली प्रकार समझ सकते है कि यह किस प्रकार का कर्म का आदेश इस पवित्र ग्रन्थ में दिया है।

(२) पत्थर और काठ के साथ व्यभिचारः—उसकी बिश्वास घातिन बहिन यहुदा न डटी वरन जाकर आप भी व्यभिचारिणि बनी। और उसके निर्लज्ज व्यभिचारिणि होने के कारण देश भी अशुद्ध हो गया और उसने पत्थर और काठ के साथ व्यभिचार किया (यर्मयाह पर्व ६ आयत ८, ६, १०) १६०७ ई० की छपी में इस प्रकार लिखा है—उसने पत्थर और काठ की मुर्तियों के साथ व्यभिचार किया।

समीक्षाः—क्या उस समय सब ईसाई नपुसंक हो गये थे कि यहुदा की कामाग्नि को शान्त न कर सकते थे? व्यभिचार की चरम सीमा हो गई। टीका टिप्पणी व्यर्थ है। ऐसी पवित्र पुस्तक की ऐसी शिक्षा पाश्चात्य देशों को ही स्वीकार हो यहाँ नहीं।

(३) यहूदा का अपने पुत्रवधु (पतोहू) से व्यभिचारः—यहूदा

ने अपने पुत्र एर की विधवा पत्नि और शेल की भावि पत्नि तामार से एनैम नगर के फाटक के पास व्यभिचार किया और उसको दक्षिणा में मुहर बाजुबन्द और छड़ी दी, उससे परेस और जेरह नाम के दो यमज पुत्र उत्पन्न हुए (उत्पति पर्व ३८ आयत १३————३० यक)

समीक्षाः—यहुदा का काम कैसा हुआ विचारे। बाईबल के लैव्यवस्था पर्व १८ के अनुसार सुकर्म या कुकर्म ?

४. यहोवा द्वारा महिलाओं को नगां करनाः—यहोव ने यह भी कहा है कि सिय्योन की स्त्रियाँ जो घमण्ड करती और सिर ऊँचे किये आँखे मटकाती और घुंघरुओ को छमछमाती हुई ठुमुक-ठुमुक चलती है, इसलिये प्रभु यहोवा उनके चोण्डे को गंजा करेगा और उनके तन को उघरवायगा (यशायाह नभिष्यद् वक्ता की पुस्तक पर्व ३ आयत १६ १७)

समीक्षाः—किसी संत्भ्रान्त महिला के सिर को मुड़वाना और उसको नग्न करना, किसी महा लम्पट मनुष्य का काम है या ईश्वर का, विचारे।

५. स्त्रियों का पशुओं से मैथुन कराना:—यहोवा इस्रायलियों को मूसा द्वारा उपदेश देता है—स्त्रीगमन की रीति से पुरुष गमन न करना वह तो घिनौना काम है। किसी जाति के पशु के साथ पशु गमन कर के अशुद्ध न हो जाना और न कोई स्त्री पशु सामने इसलिए खड़ी हो कि उसके संग कुकर्म करे, यह तो उल्टी बात है। (लैव्यवस्था पर्व १८ आयत २२, २३)

समीक्षाः—बाईबल के इस वचन से पता चलता है कि

इस्रायलियों में पुरुष मैथुन और स्त्रियों का पशुओं से मैथुन कराने की प्रथा प्रचलित थी। यह पवित्र शास्त्र की बाते हैं ?

६. दाऊद को एक स्त्री से व्यभिचार:—सांझ के समय दाऊद पंलग पर से उठकर राजभवन की छत पर से उसको एक स्त्री जो बहुत सुन्दरी थी नहाती हुई देख पड़ी। जब दाऊद ने भेज कर उस स्त्री से पुछवाया तब किसी ने कहा, क्या यह एलीआम की बेटी और हिती उरिय्या की पत्नि बतशेवा नहीं है ? तब उसने दूत कर उसे बुलवा लिया और वह दाऊद के पास आई और वह उसके साथ सोया वह तो ऋतु से शुद्ध हुई थी, तब वह अपने घर लौट गई और वह गर्भवती हुई .....

जब उरिय्याह की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया है तब वह अपने पति के लिए रोने पीटने लगी, और जब उसके बिलाप के दिन बित चूके तब दाऊद ने उसे बुला कर अपने घर में रख लिया और उसकी पत्नि हो गई और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ (शमूयल नाम दूसरी पुस्तक पर्व ११ आयत २–२७ तक)

समीक्षा:—एक सम्भ्रान्त महिला से व्यभिचार करना उसके पति को कत्ल करवाना और झूठ बोलना क्या यह पैगम्बर का काम है ? किसी भी तरह से व्यभिचार का निषेध मति रचित सुसमाचार पर्व ५ आयत २७.....३२ तक है।

७. दाऊद के पुत्र अम्नोन का अपनी बहन के साथ व्यभिचार :— अम्नोन अपनी बहन तमार के

कारण ऐसा विकल हुआ कि बिमार पड़ गया, क्योंकि वह कुमारी थी .....उससे बलवान होने के कारण उसके साथ कुकर्म करके उसे भ्रष्ट किया (शमूयल नाम दूसरी पुस्तक पर्व १३ आयत १.....२० तक)

समीक्षा जैसा बाप दाऊद, वैसा बेटा, बहिन के साथ कैसा कोर्टशिप हो रहा है !! बहिन के लिए रुग्न होने का बहाना करके उससे भोजन बनवाया और जब भोजन लेकर उसको खाने को देने गई तो वह बलात्कार किया और बलपूर्वक अपने टहलुए जवान से निकलवा कर द्वार बन्द कर दिया, छि: छि: पवित्र पुस्तक की ऐसी अश्लीलता यह धर्म शास्त्र है या व्यभिचार शास्त्र पाठक विचार करें।

८. अपनी पुत्री से हजरत लूत का संभोग करना :-

और लुत ने सोअर को छोड़ दिया और पहाड़ पर अपनी दोनो बेटियों के साथ रहने लगा, क्योंकि वह सोअर में रहने से डरता था, इसलिये वह और उसकी दोनो बेटियाँ वहाँ एक गुफा में रहने लगे। तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, हमारा पिता बुढ़ा है और पृथ्वी भर में ऐसा कोई पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आऐ, सो आ हम अपने पिता को दाख मधु पिलाकर उसके साथ सोवें, जिससे कि हम पिता के वंश को बचाये रखे। सो उन्होंने उसी दिन रात के समय अपने पिता दाख मधु पिलाया तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई, पर उसने न जाना कि वह कब लेटी और उठ गई और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा देख कल्ह रात को मैंने अपने पिता के साथ सोई, सो आज भी रात को हम उसको दाख मधु पिलावें तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें .....

(उत्पति पर्व १६ आयत ३०— ३८ तक)

समीक्षा:— लूत ने शराब पीकर दोनो बेटियों से संभोग कर वंश चलाया, यह लूत का कर्म पवित्र हुआ या अपवित्र सज्जन विचारे। मद्यपान के कारण पिता पुत्री भी कुकर्म से नहीं बचे तो जो ईसाई शराबी हैं; वे कुकर्म से क्यों बच सकते हैं। जब की नीति वचन (२०।१) में दाख मधु ठट्ठा करने वाला और मदिरा मानो हौरा मचाने हारी है, जो कोई उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं। पुन: होशे पर्व ४ अयत ११—वेश्या गमन, दाख मधु:ताजा, दाख-मधु ये तीनो बुद्धि को भ्रष्ठ करते हैं „ लिखा है।

६. पुरुष मैथुन का वर्णन—सांझ को वे दो दूत सदोम के पास आये और लूत सदोम फाटक के पास बैठा था; सो उनको देखकर वह उतसे भेंट करने के लिये उठा..... उनको घर ले जाकर उनके लिये जेवनार की और बिन खमीर की रोटियाँ बनवा कर उनको खिलाई। उनके सो जाने से पहिले उस सदोम नगर के पुरुषों ने जवानों से लेकर बुढ़ों तक बरन चारों ओर के सब लोगों ने आकर घर को घेर लिया। और लूत को पुकार कर कहने लगे जो पुरुष आज रात को तेरे पास आये हैं, वे कहाँ हैं उनको हमारे पास बाहर ले आओ कि हम उनसे भोग करें १६५० ई० (१६०७ ई० की छपी में लौंडे बाजी करें) तब लुत उनके पास द्वार के बाहर गया और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके कहा हे भाइयो! ऐसी बुराई न करो सो सुनो, मेरी दो बेटियाँ हैं जिन्होने अबलो पुरुष का मुख नहीं देखा, इच्छा हो तो मैं

उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं और तुमको जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो तो करो पर इन पुरुषों कुछ न करो।

(उत्पति पर्व १६ आयत १ ....८ तक)

समीक्षा:—इन गन्दी आयतों से पता चलता है कि उस समय सदोम नगर में अप्राकृतिक व्यभिचार का बहुत प्रचार था। हजरत लूत के अपनी बेटियों को उन बदमासों को सौंपते लाज न आई। हजरत लूत ने यहाँ झूठ भी बोला है कि " मेरी दोनों पुत्रियों ने अभी लों पुरुषों का मुहं नही देखा है,, पर साफ लिखा है कि तब " लूत ने निकल कर अपने दमादों को जिनके साथ उसकी बेटियों की सगाई हो गई थी ; (उत्पति पर्व १६ आयत १४) जब उन पुत्रियों की शादी हो चूकी थी और दामाद भी साथ में ही थे, तो उन्होंने फिर झूठ क्यों बोला। वे वही लड़कियाँ है जिनके साथ हजरत लूत ने सहवास कर वंश चलाया।

१०. व्यभिचार का आदेश:—मूसा सहस्रपति, शत-पति आदि सेना पतियों से जो युद्ध करके लौट आये थे क्रोधित होकर कहने लगा क्या तुमने सब स्त्रियों को जीवन छोड़ दिया... तो अब बाल बच्चो में से हर एक लड़के को और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुख देखा हो उन सब का घात करो, परन्तु जितनी लड़कियो ने पुरुष का मुंख न देखा हो उन सभी को अपने लिये जीवित रखो। (गिनती पर्व ३१ आयत १४......३१ तक)

समीक्षा:—हजरत मूसा ने यहोवा के आदेश से मिश्रियों की सम्पति लुटवा ली और निरपराध बच्चों और विवाहित स्त्रीयों को

कत्ल करवाया और अविवाहित लड़कियों से व्यभिचार के लिए आदेश दिया। देखिये कैसी पवित्र धर्म पुस्तक है। यह अद्-भूत पुस्तक की अद्भूत बाते हैं।

११. विचित्र काम शास्त्र—बाईबल के पुराने नियम में "श्रेष्ठ गीत" एक पुस्तक है, उसमें ८ अध्याय हैं जिनमें सुलेमान के सुन्दर संगीत है। उनमें से एक यह है, हे मेरी प्रिया तू सुन्दर है तू सुन्दर है तेरी आँखे तेरी लटों के बीच में कबुतरों का सी. दिखाई देती है ·····तेरे होठ लाल रंग की डोरी के समान है और तेरा मुंह मनोहर है·· तेरी दोनो छातियां मृग के दो जुड़वें बच्चों के तुल्य है; हे मेरी बहिन हे मेरी दुलहिन तू ने मेरा मन मोह लिया है हे मेरी बहिन हे मेरी दुलहिन तेरा प्रेम क्या ही मनोहर तेरा प्रेम दाखमधु से क्या ही उत्तम है (श्रेष्ठ गीत पर्व ४ आयत १···१० तक)

समीक्षाः—सुलेमान प्रेमिका को बहन भी कहता है, और दुल्हिन भी, क्या पवित्र पुस्तक भाई बहन से वैषयिक प्रेम के लिये उपदेश देता है। ऐसी पवित्र शिक्षा की पवित्र आर्यावर्त में जरूरत नहीं। इस पर श्री थोमसपेन कहते हैं:—

"Soloman's songs are amortous and foolish enough but which wrinkhed fanticism has called Divine homas paine,,

अर्थात् सुलेमान की संगीत अधिकतर रसिक और मुर्खता पूर्ण हैं परन्तु इन्हे संकुचित धार्मिक हठ ने पवित्र देवी कहा है।

१२. ईसा का एकान्त में पर स्त्री से सेवा

कराना तथा वार्तालापः——मार्था सेवा करते २ घबड़ा गई और उसके पास आकर कहने लगी हे प्रभु क्या तुझे सोच नहीं कि मेरी बहिन ने तुझे सेवा करने के लिए अकेली छोड़ दी है ··· प्रभु ने उत्तर दिया, मारथा हे मारथा ! तू बहुत, बातों के लिए चिन्ता करती है और घबड़ाती है। (लुका रचित सुसमाचार पर्व १० आयत ३८—४१ तक)

समीक्षाः--ईसा एकान्त में पर स्त्री से सेवा कराता था और बात-चीत करता था तो उसका चरित्र अच्छा कैसे हो सकता है।

१३. सर्व प्रकार के मांस खाने का आदेशः—

(क) ईश्वर ने नूह को और उसके बेटों को आशीर्वाद दिया और उनसे कहा ··· सब चलने वाले तुम्हारा आहार होगे, जैसा तुमको हरे-हरे छोटे पेड़ दिये थे तैसा ही अब सब कुछ देता हूँ पर मांस को प्रान समेत अर्थात् लोहू समेत तुम न खाना,,

((उत्पत्ति पर्व ६ आयत १, ३, ४))

जो कुछ कसाईयों के यहां बिकता है वह खाओ और विवेक कारण कुछ न पुछो। (कुरिन्थियो के ना पौलुस प्रेरित की पत्री पर्व १० आयत २५)

समीक्षाः——उपरोक्त दोनो वचनों से पता चलता है कि कुत्ते, बिल्ली, सियार, गिरगिट, साँप, छुछुन्दर, मेढक आदि सभी इनके भक्ष्य हैं ओहः कितना शान्ति प्रद मत है ? इसी से उपकारी पशु गौ को भी भक्षण में संकोच ईसाई नहीं करते। कैसी अपवित्र शिक्षा, यह राक्षसी शिक्षा है

१४. रक्त मांस का भूखा ईसाई ईश्वर-(क)यहोवा ने

मिलाप वासे तम्बू में से मूसा को बुलाकर उसे कहा, इस्राए-लियों से कहो तुम में से कोई मनुष्य यहोवा के लिए पशु का चढ़ावा चढ़ाया तो उसका बलि गाय, बैल, या भेड़, बकरियों में से एक का हो। (लैव्यवस्था पर्व १ आयत १, २)

(ख) फिर यहोवा ने मूसा से कहा ……यदि अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे, जिससे पुजा को दोष लगे तो अपने पाप के कारण एक निर्दोष बछड़ा यहोवा को पापबलि करके चढ़ायो …. यहोवा के सामने वलि करें (लैव्यवस्था पर्व ४ आयत १–४ तक)

(ग) जब कोई प्रधान पाप करके दोषी होवे। ……निर्दोष बकरा चढ़ावा करके ले आवे ……बकरे का वहां वलिदान करे।

(लैव्यवस्था पर्व ४ आयत २२–२४ तक

समीक्षा--उपरोक्त आयतों से पता चलता है कि ईसाईयों का ईश्वर रक्त मांस का प्यासा है। तभी तो पाप निवृति के लिए निर्दोष पशुओं का वलिदान करने का आदेश देता है। इतना ही नहीं लैव्यवस्था भिन्न २ प्रकार के वलिदानों से भरा है। आप पाप करे प्रायश्चित के बदले में बछिया बकरे कबुतर आदि का प्राण लेवे पाप भी दूर हो गया और मांस भी खाने को मिल गया। मालूम पड़ता है कि जंगलियों में कोई चतुर पुरुष ईश्वर बन युक्तियों से पहाड़ पर खाने के लिए पशु पक्षी अन्नादि मंगा कर मौज करता था, जंगलियों ने उसी को ईश्वर मान लिया। इसी कुसंस्कार के कारण वेदो में भी झूठा दोष ईसाई विद्वान् लगाते है परन्तु वेदो में ऐसी बातों का नाम नहीं।

(विशेष जानकारी के लिए "वेदो का यथार्थ स्वरूप,, पं. धर्मदेव विद्या वाचस्पति द्वारा लिखित पढ़े)

१५. **नर बलि की प्रथा**-ईश्वर ने इब्राहिम से यह

कह कर उसकी परीक्षा की और उसे कहा हे इब्राहिम अपने बेटे अर्थात् अपने एक लौते पुत्र इसहाक को जिससे तू प्रेम रखता है ...... होम बलि करके चढ़ा......तब इब्राहिम ने वहाँ वेदी बना लकड़ी को चुन चुन कर रखा और अपने पुत्र इसहाक को बाँध के वेदी पर की लकड़ियों पर रख दिया और इब्राहिम ने हाथ बढ़ा कर छुरी को ले लिया कि अपने पुत्र को बलि करे तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसको पुकार कर कहा। हे इब्राहिम! उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा और न उससे कुछ कर ...मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है। ...तब इब्राहिम ने जा के उस भेड़ को लिया और अपने पुत्र की सन्ती होम बलि करके चढ़ाया। (उत्पत्ति पर्व २२ आयत १........१४ तक)

समीक्षा:—इससे मालूम होता है कि मनुष्य के मांस बे लोग खाते थे। और यह ईश्वर था कि निर्दयी राक्षस जो बच्चे की बलि चाहता है। इब्राहिम भी भोला मनुष्य था; नहीं तो ऐसा काम क्यों करता और बाईबल का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं था, नहीं तो सर्वज्ञता से इब्राहिम की श्रद्धा को जान लेता।

१६. उपस्थेन्द्रिय छेदन (खतना) का आदेश

—"परमेश्वर ने इब्राहिम से कहा ...तुम अपनी खलड़ी का खतना करा लेना, जो बाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है उसका यही चिन्ह होगा, पीढ़ी-पीढ़ी में केवल वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हो वा परदेशियों को रुपा देकर मोल लिये जाय। सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जायें, तब उनका खतना किया जाय ......सो मेरी बाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग-युग रहेगी। जो पुरुष खतना रहित हो अर्थात् जिसका खलड़ी की खतना न हो वह प्राणी अपने लोगों

में से नाश किया जावे (उत्पति पर्व १६ आयत ६—११ तक) इब्राहिम का खतना ६६ वर्ष की अवस्था में हुई थी।

१७ ईसा का खतना:- जब आठ दिन पूरे हुए और उसके खतने का समय आया तब उसका नाम योशु रखा, जो स्वर्ग दूत ने उसके पेट में आने से पहले कहा था (लूका रचित सुसमाचार पर्व २ आयत २१)

समीक्षा:- जब परमेश्वर की आज्ञा है कि खतना हो, जिसका नहीं हो उसका नाश किया जावे। और योशु का भी खतना हुआ था, तब आज कल ईसाई लोग खतना नहीं करते है व वध के योग्य क्यों नहीं ? और यह आज्ञा सदा के लिये है, इसके न करने से ईसा की गवाही जो - मति रचित सुसमाचार पर्व ५ आयत १७-१६ तक में लिखा है-

"यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यत् वक्ताओं की पुस्तको को लोप करने आया हूँ लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक आकाश, पृथ्वी टल न जाये तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। इस लिये इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े और वैसा ही लोगों को सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलायगा बाद विवाद में पादरी कह दिया करते हैं कि पुराना नियम (Old Testament)यहुदियों के लिये है, हम तो नया नियम को ही मानते हैं। परन्तु उनकी बात का खण्डन स्वयं नया नियम में वर्णित है उपरोक्त बात से तथा पतरस की दूसरी पत्री पर्व ३ आयत २- से हो जाती है जैसे कि" तुम उन बातों को जो पवित्र भविष्यद् वक्ताओं (नबियों) ने पहले से कही है और प्रभु और उद्धार कर्त्ता की आज्ञा को स्मरण करो जो तुम्हारे प्रेरित द्वारा दी गई है ,,

ईसाई लोग इस आज्ञा भंग का कुछ बिचार नहीं करते।

दूसरी यह ईश्वर का अन्यथा आज्ञा है जो खतना करना ही इष्ट होता तो आदि सृष्टि में बनाता ही नहीं और जो यह बनाया है, वह रक्षार्थ है जैसा आँख के ऊपर का चमड़ा क्योंकि वह गुप्त स्थान अति कोमल है जो उस पर चमड़ा न हो तो एक कीड़ी के काटने और थोड़ी से चोट लगने से बहुत दुःख होवे और पेशाब करने के पश्चात् कुछ मुत्रांश कपड़ो में लगे इत्यदि बातों के लिए उस का काटना बुरा है।

प्रकीर्ण (छिट फुट बातें)

१. महा बुतपरस्ती (पाषाणादि पूजा)— भोर को याकुब तड़के उठा, और अपने तकिये का पत्थर लेकर खम्भा खड़ा किया और उसके सिर पर तेल डाल दिया। और उसने उस स्थान का नाम बेतेल, (ईश्वर भवन) नाम रखा। और यह पत्थर जिसको मैं ने खड़ा किया है परमेश्वर का भवन ठहरेगा। (उत्पति पर्व २८ आयत १८,१९,२२) राहेल अपने पिता के गृह देवताओं को चुरा कर ले गई ..... पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा लायी है, याकुब ने उत्तर दिया— — — —राहेल तो गृह देवताओं को ऊँट की काठी में रखकर उनपर बैठी थी। (उत्पति पर्व १३१ आयत १९----३४ तक)

समीक्षा:— पत्थर पूजा जंगलियों का काम है, उन्होंने पत्थर पूजे और पूजवाये क्या? यही पत्थर ईश्वर का घर है और उसी पत्थर मात्र में ईश्वर रहता है, अन्य जगह नहीं। क्या यह ईसाइयों की यह महाबुतपरस्ती नहीं है? जंगली लोग तो पाषाणादि मूर्तियों को देव मानकर पूजते थे, परन्तु ईसाइयों का ईश्वर भी पत्थर ही को ईश्वर मानते है

नहीं तो देवों का चुराना कैसे होता।

(ख) मैं उनको सत्यानाश करूंगा, उनके देवताओं को दण्डवत न करना न उनकी उपासना, न उनकी मूरत बनाना (और न उनसे काम लेना १६५०) बल्कि उन मूर्तों को पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना और उन लोगों को लाठों को तोड़ के टुकड़े-टुकड़े करदेना। / निर्गमन पर्व २३, आयत २४,२५)

समीक्षा:— देखिये यहोवा की पर मत असहिष्णु की शिक्षा इसी से ईसाई लोगों ने हिन्दुओं के गोवा आदि में उनके स्थानो में हिन्दूमन्दिरों को गिराकर गिरजा घर बनाना आदि शिक्षा का परिणाम है, इनके पर मत पर अत्याचारों के काले कारनामो से इतिहास के पन्ने भरे हुए हैं।

(नोट:— इस सम्बन्ध में आप एक छोटी पुस्तक पढ़े - गोरे पादरियों के काले कारनामे – प्रकाशक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)।

२· मृतक गाड़ने की प्रथा- सो आप हमारी कबरों में से जिसको तू चाहे उस में अपने मूर्दे को गाड़। (उत्पति पर्व २३ आयत ६-)

समीक्षा- मृतक को पृथ्वी में गाड़ने से संसार को बिशेष हानी होती है, क्योंकि सड़कर वायु को दुर्गन्ध सब कर रोग फैला देता है। अब तो बड़े २ वैज्ञानिक मुर्दों को जलाने के पक्ष में है। (ईसाई पत्र नूरेनिशा १७-६-१८६१) में लिखा है – "मुर्दों का जलाया जाना गाड़े जाने की अपेक्षा लाभदायक है,, वेद में साफ लिखा है, "भस्मान्तर्थं शरीरम् ,, शरीर को जलाने का विधान इस मन्त्र में बताया है। अतः यह सर्वोत्तम विधि जलाना है।

(३) यहोवा द्वारा भाषा मे गड़बड़ी:- सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी.....: इसलिए

आओ हम उतर कर उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डाल दें कि वे एक दूसरों की बोली न समझ सकें। (उत्पति पर्व ११ आयत १.....६तक)

समीक्षा- एक समय संस्कृत विश्व की भाषा थी जिससे सारी भाषायें निकली है (Mr. Bopp —" Sanskrit is more perfect and copious than Greek and Latin, at one time Sanskrit was the one language spoken all over the World,, अर्थात् संस्कृत ग्रीक और लैटिन से अधिक पूर्ण है। एक समय संस्कृत सारे विश्व में बोली जाती थी।

इस संस्कृत भाषा में ईसाईयों के ईश्वर यहोवा ने गड़बड़ी डाल दी, भाषाओं का भ्रष्ट करने वाला ईश्वर, का यह कार्य शैतान के कार्य से भी बुरा कार्य नहीं है? इस समय संसार में कितना आनन्द होगा जब सबकी एक भाषा और बोली होगी।

(४) गदही को ईश्वर दूत का दर्शनः- गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिएहुए दिखलाई पड़ा, तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई तब बिलाम ने गदही को मारा कि वह मार्ग पर फिर आ जाय। तब यहोवा ने गदही का मुह खोल दिया और वह बिलाम से कहने लगी मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे तीन बार मारा (गिनती पर्व २२ आयत २३, २८)

समीक्षाः- प्रथम तो गदहे गदही तक ईश्वर के दूतों को देखते थे, पर आज विश्व के किसी पादरी को ईश्वर दूत दृष्टि गोचर नहीं होते। क्या सम्प्रति ईश्वर और उनके दूत कुम्भकर्णी निद्रा में हैं? इस प्रकार का गपोड़ो को जंगली लोगों के सिवाय कौन मानेगा।

(५) याकूब का यहोवा से मल्ल युद्ध करना:- और याकूब आप अकेला रह गया, तब कोई पुरुष आकर पह फटने तक उससे मल्ल युद्ध करता रहा, जब उसने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जांघ की नस को छुआ, सो याकुब की जांघ की नस उससे मल्ल युद्ध करते ही करते चढ़ गई। तब उसने कहा, मुझे जाने दे क्योंकि भोर हुआ चाहता है। याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आर्शीवाद न दे तब तक तुझे जाने न दूंगा — — —उसने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं इस्रायल होगा क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से युद्ध करके प्रबल हुआ है (उत्पति पर्व ३२ आयत २४- - -२८ तक)

समीक्षा:- ईश्वर ने याकूब की जांघ की नाड़ी चढ़ाकर जीता यह मल्ल युद्ध के नियम को तोड़ा, यदि डाक्टर होता तो पुनः अच्छा कर देता, ऐसे ईश्वर की भक्ति से याकूब लंगड़ाता रहा तो अन्य भक्त भी लंगड़ाते होंगे। ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा और मल्ल युद्ध किया, इससे ईश्वर कोई शरीर धारी सिद्ध होता है और वह शारीरिक बल में याकूब से बलहीन था तभी तो याकूब से पिण्ड छुड़ाने के लिए उसकी जांघ की नस चढ़ा दी।

(६) ईश्वर (यहोवा) के बेटे (क) उनके बेटियां उत्पन्न हुई। तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर हैं; जिस जिस को चाहा उससे विवाह कर लिया, और उन दिनों पृथ्वी पर दानव (नपील) रहते थे और उसके पश्चात् जब परमेश्वर पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास गये तब उनके द्वारा जो सन्तान उत्पन्न हुए वे पुत्र शूरवीर होते थे जिनकी कीर्ति प्राचीन काल से प्रचलित है। (उत्पति पर्व ६ आयत १-४)

पुस्तक प्रतिग्रहण क्रमांक 5284

(ख) और तू फिरौन से कहना कि यहोवा यों कहता है कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेटा है। (निर्गमन पर्व ४ आयत २२)

(ग) और वह (आदम) परमेश्वर का (पुत्र) था।

(लुका रचित सुसमाचार पर्व ३ आयत ३८)

(घ) धन्य है वे जो मेल करने वाले है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएगें (मत्तिरचित सुसमाचार पर्व ५ आयत ६)

(ङ) इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। (रोमियो के नाम पौलुस प्रेरित पत्री पर्व ८ आयत १४)

समीक्षाः- यहां पर ईश्वर के बेटों के विवाह का वर्णन से सिद्ध होता है कि ईश्वर शरीरधारी था, जब उसके बेटों का बिवाह हुआ सो उस ईश्वर की स्त्री, सास स्वशुर श्याला सम्बन्धि आदि भी होंगे। ईश्वर के अनेक पुत्रों में से ईसा कौन सा पुत्र था, जब की ईसाई लोग ईश्वर का एक जौता बेटा कहते हैं। ईसा ने तो अपने मुख से अपने आप मनुष्य पुत्र ही कहा है "देखिये,, मनुष्य पुत्र क्रुश पर चढ़ाया जाने के लिए पकड़वाया जायगा। (मत्तरचित सुसमाचार पर्व २६ आयत २) इसीप्रकार इसी सुसमाचार में ८।२०, ९।६, १०।२३, १२।४०, १७।२१, पर्व, आयतों में मनुष्य पुत्र कहा है।

उस समय लोगों ने भी उसको ईश्वर पुत्र नहीं कहा, – जैसे क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं? और क्या उसकी माता का नाम मरियम और उसके भाइयों का नाम याकूब और युसुफ, शमौन, याहुदा नहीं

(मति रचित सुसमाचार पर्व १३ आयत ५५, ५६)

क्या यह वही बढ़ई नहीं जो मरियम का पुत्र और याकूब

योसेस यहूदा, शेमौन का भाई है और क्या उसकी बहने यहां हमारे बीच में नहीं रहती (लूका रचित सुसमाचार पर्व ६ आयत ३) जब ईशु उपदेश करने लगा तब लगभग ३० वर्ष का था और युसुफ का पुत्र था (लूका रचित सुसमाचार पर्व ३ आयत २३)

हे पुत्र तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख तेरे पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढुढ़ते थे। (लूका रचित सुसमाचार पर्व २ आयत ४८) क्या यह युसुफ का पुत्र नहीं? (लूका रचित सुसमाचार पर्व ४ आयत २२)

इन प्रमाणों से सिद्ध है कि ईसा युसुफ का पुत्र था जो दाऊद नबी के वंश से था। यह वंश उबधि से चला था जिसको उसकी विधवा माता ने अपनी सास की आज्ञा से अपने मृत पति के लिए पति के समीपस्थ सम्बन्धी से उत्पन्न किया था। पुनः ईशु मसीह ही परमात्मा के एकलौता पुत्र न था वरन इस्रायल, आदम, मेल कराने वाले जिन पुत्रों के मनुष्य की पुत्रियों से विवाह हुआ था, तथा दाउद भी एकलौता पुत्र है दाऊद को भी परमेश्वर को भी अपना पहिलौठा बेटा कहा गया है जैसे— "फिर मैं उसको (दाऊद) अपना पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊगाँ (भजन संहिता पर्व ८९ आ०२७)

(७) ईसा में कोई चमत्कार नहीं:- इस पर कितने शास्त्रियों और परीसियों ने कहा कि हे गुरु! हम तुमसे एक चिन्ह (निशान) देखना चाहते है। उसने उत्तर दिया कि इस समय बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूढ़ते हैं पर युनुस नबी के चिन्ह को छोड़कर कोई चिन्ह उनको न दिया जायगा। (मति रचित सुसमाचार पर्व १२ आयत ३८-४०त.)

हे मन्दिर के ढाहने वाले और तीन दिन में बनाने वाले अपने आप को बचा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रस पर से उतर आ । इसी रीत से महा याजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा करके कहते थे । उसने औरों को बचाता और अपने को नहीं बचा सका। यह इस्त्रायल का राजा है, अब क्रुस पर से उतर आये तो हम उस पर विश्वास करें । उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है यदि वह इसको चाहता है तो अब इसे छुड़ाले ..... इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रुसो पर चढ़ाये गये थे उनकी निन्दा करते थे।

(मत्तिरचित सुसमाचार पर्व २७ आयत ४०.....४४)

समीक्षाः- जो २ आश्चर्य कर्म प्रथम किये सच होते तो अब भी क्रुस पर भी उतर कर सबको अपना शिष्य बना लेता और जो वह ईश्वर का पुत्र होता तो ईश्वर भी उसको बचा, यहां सभी चमत्कार कहां चली गई। इसी प्रकार लुका (२३।८-९) में हिरोदेस के बार २ कहने पर भी कुछ चमत्कार नहीं दिखाया और चुप रहा।

(८) ईसा में विश्वास से मुक्ति नहीं- "देख मैं शीघ्र आने वाला हूँ और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है (यूहन्ना के प्रकाशित वाक्य पर्व २२ आयत १२)

प्रभु की आंखे धर्मियों पर लगी रहती है, उसके कान उसकी बिनती की ओर लगे रहते है, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है।

(पतरस की पहली पत्री पर्व ३ आयत १२)

जो मुझसे हे प्रभु हे प्रभु कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे

स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है । उस दिन बहुतेरे मुझसे कहगें ..... उन से खुलकर कहदूगाँ कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ ।

(मति रचित सुसमाचार पर्व ७ आयत २१..... २३ तक)

सो तुमने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं बरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है । (याकूब पर्व २ आयत २४)

धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठो में नहीं उड़ाया जाता क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोला है वही काटेगा । (गलतियों के नाम पौ० प्रे० प० ६ आयत ७)

तुझे विश्वास है कि एक परमेश्वर है: तू अच्छा करता है: — — — —पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह नहीं जानता कि कर्म बिना बिश्वास व्यर्थ है ।

(याकूब की पत्री पर्व २ आयत १६,२०

वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा । जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा । (रोमियों के नाम पौ० प्रे० पत्री पर्व २ आयत ६,७)

क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता .....क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था सुनने वाले धर्मी नहीं पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जायगें । (रो० पौ० प्रे० पत्री पर्व २ आयत ११, १३) परन्तु उन का अन्त उनके कामो के अनुसार होगा ।

(कुरन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री पर्व ११ आयत १५)

इसके अतिरिक्त और बहुत आयत इस सम्बन्ध में मिलता

है अतः विस्तार से अलग प्रकाश डाला जायगा ! (प्रकाशक)

समीक्षा:- बाईबल के इन प्रमाणों से सिद्ध है कि मुक्ति अच्छे कर्मों से होती है, ईसु में विश्वास से नहीं, जिस ईसा को पादरी लोग मुक्ति दाता कहते है वह स्वयं कहता है कि हर एक को अपने काम के अनुसार बदला मिलेगा, अतः पादरी लोग जनता को धोखा देते हैं और ईसा की शिक्षा के विरुद्ध आचरण करते हैं। केवल धन, नौकरी, महिला आदि का लोभ देकर निर्धन और मन चले नवयुवकों को ठगते हैं। उपर के आयतों कर्म पर विशेष बल दिया गया है और अच्छे कामों से ही धर्मी बन सकता है केवल उपदेश देने से नहीं।

(८) ईसा के दो प्रकार का उपदेश:- हत्या न करना

(क)..........व्यभिचार न करना ---- झूठी सपथ न खाना ---- जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर देना ---- तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। और जो कोई तुझे कोसभर बेगार में ले जाय तो उसके साथ दो कोस चला जा। जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे।------तू अपने बैरियों से प्रेम रखो।---(मति रचित सुसमाचार पर्व ५ आयत २१ -----४८ तक)

(ख) यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ; मैं मिलाप कराने को नहीं पर तलवार चलाने आया हूँ। मैं तो आया हूँ कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी माँ से और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। (मति र० सु० पर्व १० आयत ३४,३५)

मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ; और क्या चाहता हूँ केवल यह कि अभी सुलग जाती। क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूँ? मैं तुम से सच कहता हूँ; नहीं, वरन अलग कराने आया हूं। पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा; माँ बेटी से, और बेटी माँ से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रखेगी।

लूका रचित सुसमाचार पर्व १२ आयत ४६, ५१, ५३)

जिसके पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले। उन्होंने कहा; हे प्रभु देख, यहां दो तलवारें हैं उस ने उन से कहा बहुत हैं। हे प्रभु, क्या हम तलवार चलाएं? और उन मैं से एक ने महायाजक के दास पर चलाकर उसका दाहिना कान उड़ा दिया

(लुका रचित सुसमाचार पर्व २२ आयत ३६,३८,४६,५०)

मीमांसा:- कहां गया ईसा का वह सत्य अहिंसा का उपदेश वह केवल दूसरों को ठगने के लिए है अपने व्यवहार के लिए नहीं क्या कपड़ा बेच कर तलवार खरीदना तलवार रखना अहिंसक भेड़ो बैलो को कोड़ा मारने वाला भी दयालु और अहिंसक हो सकता है! आज पिता, पुत्र, माता पुत्री, सास बहु में परस्पर विरोध की शिक्षा इस पवित्र शास्त्र की शिक्षा का कुपरिणाम है। इसने स्वयं अपने भाईयों से झूठ बोला, मछली खाया, शराब पीया चोरी करवाया (देखिये यूहन्ना पर्व ७ आयत २- १० तक)।

क्या ईसाई लोग ईसा के पूर्वोक्त शिक्षा का पालन करते हैं? ईसाई पादरियों ने स्वय बड़े २ अत्याचार किये। कितने बैज्ञानिकों गैलेलियो, ब्रूनो आदि को यातनाए एवं जीवित जला दिया। कितने को कोड़े लगवाये, अपने अधिनस्थ देशों में ईसाई लोगो ने क्या अत्याचार नहीं किया आज गोवा, अफ्रिका आदि इनके अत्याचार के नमूने हैं। ईसा के शिष्यों ने खुलकर तलवार का प्रयोग किया। क्या ये सब अहिंसा सत्य के व्यवहार है। (विशेष जानकारी के लिए पढ़े ईसाईयों के देश में मानव चाण्डाल से भी बदत्तर

१० ईसा के कथनानुसार इस समय कोई ईसाई नहीं- मैं तुम से सत्य कहता हूँ यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो तो इस पहाड़ से कह सकोगे कि यहां से सरक कर वहां चला जा तो वह चला जायगा और कोई बात तुम्हारे लिये अनहोनी न होगी (मति रचित सुसमाचार पर्व १७ आयत २०)। और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि ये मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई २ भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे और यदि वे नाशक वस्तु भी खाले तो भी उनकी कुछ हानि नहीं होगी, वे बिमारों पर हाथ रखेंगे और चंगे हो जयेंगे (मरकुश रचित सुसमाचार पर्व ..... आयत)। जो मुझपर विश्वास करता है वे काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इससे भी बढ़कर काम करेगा, (यूहन्ना) यदि तुम विश्वास रखो और सन्देह न करो तो न केवल यह करोगे ---- इस पहाड़ से भी कहोगे उखड़ जा और समुद्र में जा पड़े तो यह हो जायगा (मति रचित सुसमाचार पर्व --- आयत)

समीक्षा:- इसाई लोग ईसा पर विश्वास रखते हैं तो पहाड़ टालकर, विष खाकर, काला सांप उठाकर टी०बी० आदि रोगियों को हाथ से स्पश द्वारा चंगा कर, मुर्दा जिला कर ईसाइयत की परीक्षा दें, यदि नहीं कर सकते हैं तो एकदम ईसाई नहीं, पुनः दूसरों को ईसाई बनने का उपदेश करना धोखा देना है। या तो इञ्जिल को झूठ माने, या तो अपने को ईसाई कहने से बाज आवें और जो विश्वास से भी आश्चर्य काम नहीं कर सकते तो ईसा ने भी आश्चर्य काम नहीं किये ऐसा ही निश्चित जानना चाहिये क्योंकि इसा स्वयं ही कहता है तुम भी आश्चाय काम करोगे तौभी इस समय ईसाई कोई एक भी नहीं कर सकता तो किसके हृदय की आंख फूट गई है कि वह ईसा को मुर्दा आदि जिलाने का काम कर्त्ता माने, यदि कोई कर भी ले तो राई के दाने भर ही इसाई ठहरेगा पूरा नहीं ऐसे गपोडमत में हेनी, पेनी, लडी, पैडी वाले ही अकल के

अन्धे ही फंसते हैं।

ईसाई लोग बड़े २ अस्पताल क्यों रखे हैं तोड़वादें, हाथ से स्पर्श कर चंगाकर दें। जब भूत (दुष्टात्मा) की सत्ता नहीं तो फिर निकालना उसको ये सब माया जाल मूर्खों के फंसाने का है।

आग से बपतिस्मा — मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है वह मुझसे शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने योग्य नहीं, वह तुम्हे पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा (मति-रचित सुसमाचार पर्व ३ आयत ११) मैं तुम्हें पानी से बप-तिस्मा देता हूँ, परन्तु वह आने वाला है जो मुझसे शक्तिमान है मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्धन खोल सकूं वह तुम्हें पवित्रात्मा और आग से बपतिस्मा देगा (लूका ३/१६

समीक्षा:- आज तक बाइबल की वेदी पर किसी भी ईसाई पादरी ने आग से बपतिस्मा नहीं दिया। आग से बपतिस्मा देकर विश्व में केवल **महर्षि दयानन्द सरस्वती** और उनका स्थापित किया हुआ **आर्य समाज** ने ही अग्नि कुण्ड के सामने बैठाकर बपतिस्मा देने का अर्थात् वैदिक धर्म में दीक्षित होने का शुद्धि चक्र चलाया है। यूहन्ना की भविष्यवाणी के अनुसार सभी इसाई लोग आग से बपतिस्मा लेकर अर्थात् शुद्ध होकर वैदिक धर्म में दीक्षित हो जायें और अपना जीवन सफल करें

१२ असम्भव बात या अनहोनी बात आकाश, पृथ्वी (क) टल जायगें परन्तु मेरी बात कभी न टलेगी (मति रचित सुसमाचार पर्व २४ आयत ३५)।

समीक्षा:- आकाश हिलकर कहां जायगा जब आकाश अति सूक्ष्म होने से नेत्र से भी दिखता नहीं तो इसका टलना कौन देख सकता है यह असम्भव बात है।

(ख) और जैसे बड़ी प्यार से हिलाये जाने पर गुलर के वृक्ष से उसके

आकाश पत्र की नाईं जो लपेटा जाता है, अलग हो गया ।
(योहन का प्रकाशित वाक्य पर्व ६ आ० १३, १४)

समीक्षा :- योहन भविष्यद्‌ वक्ता जो विद्वान होता तो ऐसी अण्ड बण्ड कथा क्यों लिखता। भला तारे सब भूगोल है, एक पृथ्वी पर कैसे गिर सकते है और सूर्यादि का आकर्षण उनको इधर-उधर क्यों आने जाने देगा और क्या आकाश को चटाई के समान समझता है। यह आकाश साकर पदार्थ नहीं है जिसको कोई लपेट या इकटठा कर सके, इसलिये योहन आदि सब जगली मनुष्य थे उनकी इन बातों का क्या खबर।

(ग) जब पांचवे (स्वर्ग) दूत ने तुरही फूकी जो स्वर्ग में से पृथ्वी पर गिरा हुआ था और अथाह कुण्ड के कूप की कुंजी उसको दी गई और उसने अथाह कुण्ड का कूप खोला और कूप में से बड़ी भट्ठी के धुऐ की नाईं धुआं उठा और धुएँ में से टिड्डियां पृथ्वी पर निकल गई और जैसा पृथ्वी के बिछुओं को अधिकार होता है तैसा उनको अधिकार दिया गया कि उन मनुष्यों को जिनके माथे पर ईश्वर के छाप नहीं है, पांच मास उन्हें पीड़ा की जाये (यो० प्र० वा० ९-१ से ५ तक)

समीक्षा :- तुरही का शब्द सुनकर तारे उन्हीं दूतों पर और उसी स्वर्ग में गिरे होगें, यहां तो नहीं गिरे। वह कूप और टिड्डियां भी प्रलय के लिए ईश्वर ने पाली होगी और छाप को देखकर बांच भी लेती होगी कि छापवालों को मत काटो। यह केवल भोले मनुष्यों को डरा के ईसाई बना लेने का धोखा है कि जो तुम ईसाई न होगे तो तुमको टिड्डयां काटेगी, ऐसी विद्याहीन देशों में चल सकती है अर्यावर्त में नहीं क्या यह असम्भव प्रलय की बातें हो सकती हैं ?

(घ) और एक बड़ा आश्चर्य स्वर्ग में दिखाई दिया अर्थात् एक स्त्री सूर्य पहने है और चान्द उसके पांव तले है और उसके सिर पर बारह तारागणों का मुकट है और वह गर्भ-

वती होकर चिल्लाती है, क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी है — — — — दूसरा आश्चर्य स्वर्ग में दिखाई दिया और देखो एक बड़ा लाल अजगर है जिसके सात सिर और दस सींग है और उसके सिरों पर सात राजमुकुट है। और उसकी पुंछ ने आकाश की तारों को एक तीहाई खींच कर उन्हे पृथ्वी पर डाला (योहन प्रकाशित वाक्य पर्व १२ आ० १ से ४ तक)।

समीक्षा :- देखिये लम्बे चौड़े गपोड़े, इनके स्वर्ग में भी बिचारी स्त्री चिल्लाती है और उसका दुःख कोई नहीं सुनता न मिटा सकता है। और अजगर की पुंछ कितनी बड़ी थी जिसने तारों को एक तिहाई पृथ्वी पर डाला, भला पृथ्वी तो छोटी है और तारे भी बड़े २ लोक है इस पृथ्वी पर एक नहीं समा सकता किन्तु यहां यही समझना चाहिए कि ये तारे की तिहाई लिखने वालों के घर गिरे होगें और वह अजगर भी जिसकी पुछ ने यह करामत की उसी के घर में रहता होगा।

(ङ) और उसे ईश्वर के कोप के बड़े रस के कुण्ड में डाला और रस के कुण्ड का रौदन नगर के बाहर किया गया और उसके कुण्ड में से घोड़े की लगाम तक लोहू एक सौ कोस तक वह निकला (योहन प्र०वा०पर्व १४आ०१६,२०)

समीक्षा :- देखिये इनके गपोड़े इसने तो पुराणों को भी मात कर दिया है ईसाइयों का ईश्वर कोप करते समय बहुत दुखित होता होगा और उसके कोप के कुण्ड भर हैं, क्या ? उसका कोप जल है या अन्य द्रवित पदार्थ है कि जिसके कुण्ड भरे हैं। सौ कोस तक रुधिर का बहना असम्भव है, क्योंकि रुधिर हवा के लगते ही झट जम जाता है फिर क्यों कर बह सकता है।

(च) और जब मेम्ने ने छापों में से एक को खोला तब मैंने दृष्टि की और चारो प्राणियों में से एक को मेघ गर्जन के शब्द को यह कहते सुना कि आ देख और मैंने दृष्टि की

है उसके पास धनुष है और उसे मुकुट दिया गया और जय-जय पुकारता हुआ जय करते निकला, और जब उसने दूसरी छाप खोली दूसरा घोड़ा जो लाल था निकला उसको कह दिया गया कि पृथ्वी पर से मेल उठा देवे। और जब उसने तीसरी छाप खोली एक काला घोड़ा है, और जब उसने चौथी छाप खोली और देखी तो एक पीला सा घोड़ा है और जो उस पर बैठा है उसका नाम मृत्यु है इत्यादि (योहन प्रकाशित वाक्य पर्व ६ (बा १६०७ ई०, १९५० ई०)।

समीक्षा :– पुराणो से बढ़कर मिथ्या लीला है भला पुस्तकों के बन्धनों के छापे के भीतर घोड़ा सवार क्यों कर रह सकेंगे, यह असम्भव स्वप्न का बड़बड़ाना है।

(छ) उन दिनों क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अंधियारा हो जायगा चान्द का प्रकाश जाता रहेगा और तारे आकाश से गिर पड़ेगे और आकाश की सेना डिग जायगी। (१६०७ ई०) परिवर्तित (१६५० ई०) आकाश की शक्तियां हिलाई जायगी (मति २४-२६)।

समीक्षा :– तारे सब भूगोल है, क्योंकर गिरेंगे, आकाश की सेना या शक्तिया कौन सो है जो डिग जायगी या हिलाई जायंगी। यह सब असम्भव महा मूर्खों की बाते हैं। मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो। और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है वह क्योंकि निर्दोष हो सके (अय्यूब १५-१४) और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है वह क्योंकर निर्मल हो सकता है (अय्यूब २५-४)।

समीक्षा :– ईसा भी तो अपने को मनुष्य पुत्र कहा है, जैसे कि मति रचित इंजील में ८, १०-९, ६-१०, २३-१२, ४०–१७, २१) अनेक स्थलों में आता है और मरियम स्त्रीसे उत्पन्न हुआ था, इस लिये वे भी निर्दोष निर्मल और निष्कलंक नहीं ठहरे। बाईबल में मछली खाने, झूठ बोलने, चोरी करवाने, दाख रस पीने, तलवार चलवाने, गुस्सा करने, रस्सी के कोड़ों से गौ, बैल

भेड़ियों के मारने रूप उसके दोष युक्त कर्मों का वर्णन आता है। यदि कहा जाय कि उसकी माता मरियम ईश्वर (यहोवा) से या ईश्वर के दूत जिब्राइल से गर्भित हुई थी, इसलिये पवित्र तथा उत्तम है किन्तु ईसा स्वयं कहता है "कि तू मुझे उत्तम क्यों कहता है, कोई उत्तम नही केवल एक परमेश्वर" (मरकुश १५-१६) जब इनका उत्तम ईश्वर ही बछड़ा, भेड़, पण्डुक, कबुतर का मांस खाता, दाख रस और शराब का भेंट लेता, याकूब से कुश्ती लड़ता निर्दोषों को हत्या करता, करवाता और कभी-कभी भड़क कर इसराईलियों को भी नाश करता है तो पुनः उसके पुत्र ईसा में तथा उसके उपासकों में क्यों न हो !

चोटी का महत्व :- शिमशोन से वेश्या पुछी अपने मन का सारा भेद खोलकर उससे कहा। मेरे शिर पर छुरा कभी नहीं फिरा क्योंकि मैंमा के पेट से परमेश्वर का नाजीर हूँ यदि मैं मूड़ा जाऊ तो मेरा बल इतना घट जायगा कि मैं साधारण मनुष्य सा हो जाऊँगा। (न्यायियों का वृतान्त) तब उसने उसको अपने घुटनो पर सुला रखा और एक मनुष्य बुलाकर उसके सिर की सातो लटे मुड़वा डाली और वह उसे दबाने लगी और वह निर्बल हो गया। तब उसने कहा है शिमशोन पलीस्ती तेरी घात में है, तब वह चौंक कर सोचने लगा। तब पलिस्तियों ने उसे पकड़ कर उसकी आंखे फोड़ डाली और उसको ले जाके पीतल की बेड़ियों से जकड़ डाली।

समीक्षा :- उपरोक्त घटना को पढ़ने से पता चलता है कि चोटी के कारण वह बड़ा बलवान था लेकिन ज्योही उसके बाल सारा मुड़ दिया कि वह कमजोर पड़ गया। अतः उपरोक्त आयत के आधार पर प्रत्येक ईसाई को सात चोटी रखना चाहिये। इस तरह चोटी का महत्व प्रत्यक्ष रूप में बाईबल में हैं। इसे ध्यान से पढ़कर चोटी रख अपने को भारतीय संस्कृति में दीक्षित करें।

ईसामसीह ५ भाई था और कई बहने थी-

क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं ? और क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों का नाम याकूब और युसुफ और शमीन और यहूदा नहीं ? और क्या इसकी सब बहने हमारे बीच में नहीं रहती। (मति रचित सुसमाचार पर्व १३आ० ५६)

बाईबल की परस्पर विरुद्ध बातें

१ सारी धर्म पुस्तक ईश्वर प्रेरित है - हर एक शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया (२ तीमुथियस पर्व ३ आयत १६)
ईश्वर प्रेरित नहीं—जो कुछ मैं कहता हूँ वह ईश्वर की आज्ञा के अनुसार नहीं (२ कुरन्थियों पर्व ११ आयत १७)

२ ईश्वर चूने हुए मन्दिरों में रहता है- मैंने इस भवन को अपनाया और पवित्र किया मेरा नाम सदा के लिये इसमें बना रहा। मेरी आंखे और मेरा मन दोनो के लिए इसमें बना रहा। मेरी आंखे और मेरा मन दोनों नित्य यही लगे रहेंगे।

(२ इतिहास पर्व ७ आ० १६)

ईश्वर मन्दिरों में नहीं रहता-परन्तु परम प्रधान हाथ के बनाये घरों में नहीं रहता (प्रेरित के काम पर्व ७ आयत ४८)

३ मुर्दे कब्र से उठाये जायगें (क) तुरही फूंकी जायगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जायगे (१कुरन्थियो पर्व १५ आयत ५२) (ख) मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के आगे सामने खड़े हुए देखा (यूहन्ना प्रकाशित वाक्य पर्व २०आ१२ (ग) अचम्भा मत करो क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में है उसका शब्द सुनकर निकलेगे (यूहन्ना पर्व ५आयत२८) (घ) यदि मुर्दे नहीं जी उठते तो मसीह भी नहीं जी उठा (१ कुरन्थियों १५-१६)

मूर्दे कब्र से नहीं उठाये जायगें

(क) मरे हुए मूर्दे कुछ नहीं जानते, न उनको बदला मिल सकता

है क्योंकि उनका स्मरण मिट गया (सभोपदेशक पर्व ९आयत५) ख) जैसे बादल छुटकर लोप हो जाता है उसी तरह अधोलोक में उतरने वाला फिर वहां से नहीं लौट सकता अय्यूब पर्व ७ आयत ९)

४ खून न बहाना-किसी निर्दोष का खून न बहाया जाय (व्यवस्था विवरण पर्व १९आ०१०)

खून बहाना- तब उसमें से पुरुषों को तलवार से मार डालना (व्यवस्था वि० पर्व १९आ०१३) उनमें से किसी प्राणी को जीवित न छोड़ना परन्तु उनको अवश्य सत्यानाश करना अर्थात् हितियों, एमोरियों, कनानियो, परिज्जियों, हिव्वियों और यबूसियों को, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है; (व्यवस्था विवरण पर्व २० आयत १६, १७)

५ पृथ्वी नष्ट की जायगी- (क) और पृथ्वी और उस पर के काम जल जायेंगे (पतरस पर्व ३ आयत १०) (ख) तू ने पृथ्वी की नीव डाला.....वे तो नष्ट हो जायँगे।

(इब्रानियो के नाम पत्री पर्व १ आ० ११)

पृथ्वी कभी नष्ट नहीं होगी– उसने पृथ्वी को उस की नीव पर स्थिर किया है ताकि वह कभी न डगमगाय (भजन संहिता पर्व १०४ आ० ५) (अनन्त काल तक कभी न टलने की १९०७ ई०)

६ ईशु ईश्वर के समान है- मैं और पिता एक है (योहन १०-३०) जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर परमेश्वर के तुल्य होने का अपने वश में रखने की वस्तु नहो समझा (फि..... २-५)

ईशु ईश्वर के समान नहीं है– क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है (यूहन्ना १४ २८) उस दिन उस घड़ी बावत कोई नहीं जानता, न स्वर्ग दूत, न पुत्र, परन्तु केवल पिता।

(मतिरचित सुसमाचार पर्व २४ आ० ३६)

७ ईशु सर्व शक्तिमान है - स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है मति २८ १८]

ईशु सर्व शक्तिमान नहीं है– और वहाँ कोई सामर्थ का काम न कर सका [मरकुश पर्व ६ आयत ५]

८ स्त्री के त्याग का विरोध-अपनी पत्नि को व्यभिचार के सिवाय किसी और कारण से छोड़ दे तो वह उसे व्यभिचार करवाता है [मति र० सुसमाचार पर्व ५ आ० ३२]

व्यभिचार की आज्ञा- जिन लड़कियों ने पुरुष का मुंह न देखा हो उन सबों को तुम अपने लिए जीबित रखो [गिनती ३१-१८]

९ बपतिस्मा की आज्ञा- तुम जाकर सब जातियों के लोगों को पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो [मति र० सु स० पर्व २८ आयत १९]

बपतिस्मा का निषेध मसीह ने तुझे बपतिस्मा देने को नहीं बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है [१ कुरन्थियों पर्व १ आ० १७]

१० ईश्वर सर्व शक्तिमान है- तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं [यिर्मियाह ३२-१७] मैं सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ, क्या कोई काम मेरे लिए कठीन है [यिर्मियाह ३२-२७]
परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है [मति र० सुस० १९-२६]

इश्वर सर्वशक्तिमान नहीं यहोवा यहूदा के साथ रहा इसलिए उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे। इसलिये वह उन्हे न निकाल सका [न्यायि१-१९]

११ ईश्वर कृपालु दयालु और नेक है- जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रकट होती है। क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न दवाता है और न दुःख देता है [विलाप गीत पर्व ३ आयत ३३] यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह भला

प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि जो मरे उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता (यहेज केल १८-३२) यहोवा सबों के लिए भला है और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है (भजन संहिता १४५-९) वह यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भलि भाँति पहचान लें [१ तीमुथियुस पर्व २आयत४] यहोवा भला और सीधा है [भजन संहिता पर्व २५ आयत ८]

ईश्वर निर्दयी घातक और क्रुर है—

कोप रूपी मदिरा पिलाकर अचेत कर दूगां, तब मैं उन्हे एक दूसरे पर अर्थात् बाप को बेटे पर और बेटे को बाप पर पटक दूगां [यिर्मयाह १३-१४] तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वंश में कर देगा तू उन सबों को सत्यानाश करना, उनपर तरस की दृष्टि न करना [व्यवस्था वि ७-१६] इसलिये अब तू जाकर अमालेकियों को मार और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किये सत्यानाश कर, क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा क्या दूध पिउवा, क्या गाय, क्या बैल, क्या भेड़ बकरी, क्या ऊँट क्या गदहा सब को मार डाल [१शमुयल पर्व १५ आ० ३] यहोवा के संदूक के भीतर झांका था उसने उनमें से सतर मनुष्य और फिर पचास हजार मनुष्य मार डाले लोगों ने इसलिये विलाप किया कि यहोवा ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था [१शमुयल ६ १९] आने का पहूँचने तक यहोवा ने आकाश से बड़े २ पत्थर उन पर बरसाये और वे मर गये [यहोव १० ११]

१२ ईश्वर अपने कार्यों से सन्तुष्ट है तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा तो क्या देखा कि वह बहुत अच्छा है [उत्पति १ ३१]

ईश्वर अपने कार्यों से असन्तुष्ट है—

और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य बनाने से पछताया और वह मन में अति खेदित हुआ (उत्पत्ति ६-६)

१३ ईश्वर प्रकाश में रहता है- वह अगमन्य ज्योति में रहता है और न किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है (१ तिमुथियस ६-१६)

ईश्वर अन्धकार में रहता है- मैं घोर अन्धकार में वास किये रहूगाँ (राजा ८-१२) बादल और अन्धकार उसके चारो ओर है (भजन संहिता पर्व ९७ आयत २)

१४ ईश्वर फिरौन का दिल कठोर कर दिया- मैं ने उसके मन को हठीला करूगाँ और वह मेरी प्रजा को जाने नहीं देगा। (निर्गमन ४-२१)

फिरौन अपना दिल स्वयं कठोर किया- फिरौन ने देखा कि अब आराम मिला है। यहोवा के कहने के अनुसार उसने फिर अपने मन को कठोर किया और उसकी न सुनी (निर्गमन ८-१५)

१५ मूर्तियों के बनाने का निषेध- तुम अपने लिये कोई मूर्ति खोद कर न बनाना न किसी को प्रतिमा बनाना (निर्गमन २०४)

मूर्ति बनाने की आज्ञा- सोना डालकर दो करूब बनवा कर उन करूबों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए बने प्रायश्चित का ढकना उन से ढपा रहे और उसके मुख आमने सामने प्रायश्चित के ढकने की ओर हो (निर्गमन २५-१८,१९,२०)

१६ ईश्वर केवल एक ही है - हे इस्त्रायल सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर, यहोवा एक ही है (व्यवस्था विवरण ६-४)

एक को छोड़कर कोई परमेश्वर नहीं (१ कुरन्थियों ८-४)

ईश्वर अनेक हैं- स्वर्ग में गवाही देने वाले तीन है (यो० ५-७) फिर परमेश्वर ने कहा हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं (उत्पति पर्व १ आयत २६) फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया (उन्पति पर्व ३ आयत २२)

टिप्पनी— यहां पर हम बहुबचन अनेक सिद्ध करता है।
१७ ईश्वर बुराई का निर्माता नहीं- परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्त्ता है (१ कुरन्थियों .....) उसका काम खरा है और उसकी सारी, गति न्याय ही है। उसमें कुटिलता नहीं है, वह और धर्मी और सीधा है (व्यवस्था विवरण पर्व ३२ आयत ४) न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है और न वह किसी परीक्षा आप करता है (याकुब की पत्री १-१३)

ईश्वर बुराई करता है— मैं शान्ति का दाता और विपत्ति का सृजनहार हूँ (यशायाह४५-७)

१८ दास्ता और अत्याचार की आज्ञा- इसलिये उसने कहा, कनान शापित हो; वह अपने भाई बन्धुओं के दासो का दास हो (उत्पति ९-२५) मैं तुम्हारे बेटे बेटियों को यहूदियों के हाथ बिकवा दूगाँ और वे उसको शबाइयों के हाथ जो दूर देश के रहने वाले हैं, बेच देगे क्योंकि यहोवा ने यह कहा है (मोयल ३-८)

दास्ता और अत्याचार का निषेध—

जो किसी मनुष्य को चुराय चाहे उसे ले जाकर बेच डाले चाहे उसके यहां पाया जाय, तो वह भी निश्चय मार डाला जाय (निर्गमन २१-१६) परदेशी को न सताना और न उसपर अन्धेर करना क्योंकि मिश्र देश में तुम भी परदेशी थे (निर्गमन २२-२१)
१९ कोई मनुष्य निष्पाप नहीं—कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया, अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूं (नीति बचन २०-९) निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं (१ राजा ८-४६) निःसन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और भूल न करे (समोएदेशक ७-२०) कोई भी धर्मी नहीं, एक भी नहीं (रोमियो ३-१०)

ईसाई निष्पाप है- जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता। जो कोई उसमें बना रहता है वह पाप नहीं करता। जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है (यहन्ना ३-९, ६, ८)

२० ईस्वी प्रबन्ध से व्यवस्था नष्ट की गई-व्यवस्था और भविष्यद वक्ता यूहन्ना तक रहे, उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है (लूका र० सु० १६।)
और अपने शरीर में वैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञायें विधियों की रीति पर थी मिटा दिया (इफिसियो २-१५)
परन्तु जिस बन्धन में थे उसके लिये मरकर अब व्यवस्था से ऐसे छुट गये (रोमियो पर्व ७ आयत ६)

ईस्वी प्रबन्ध से व्यवस्था नष्ट नहीं की गई-

यह न समझो कि मैं व्यवस्था का भविष्यद् वक्ताओं के पुस्तकों को लोप करने आया हूँ लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ.....(मति ५-११७,११८)

२१ ईशु अपने अनुयायियों को चेताया कि मरने से न डरो- जो शरीर को घात करते है, परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो (लूका रचित सुसमाचार षर्व १२ आयत४)

ईशु मारे जाने के भय से स्वयं यहुदियों से बचता रहा-

इन बातों के बाद ईशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे। इसलिये वह यहुदियों में फिरना न चाहता था (यूहन्ना ७-१) तब उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठाया, परन्तु ईशु छिपकर मन्दिर से निकल गया (योहन ८-५६) सो उसी दिन से वे उसके मार डालने की सम्मति करने लगे। इसलिये ईशु उस समय यहूदियो में प्रकट होकर न फिरा। परन्तु वहां से जंगल के निकट के देश में इफ्राइम नाम के एक नगर को चला गया और अपने चेलों के साथ वहीं रहने लगा (यूहन्ना ११-५४)

कहां तक लिखा जाय सारा बाईबल ऐसे ही परस्पर विरुद्ध बचनों, असम्भव, अनर्गल, अश्लील, घात पात, हिंसा परक, इर्षाद्वेष मूलक लेखो से भरे हुए हैं (विशेष जानकारी के लिए "इंजील के परस्पर विरोधी वचन,, ले० रामचन्द्र देहलवी देखें) (प्रकाशक) विश्व के बड़े-बड़े पादरी बाईबल को कैसा समझते है, उनके बिचार जानकारी के लिए उधृत किये जाते है :—

(१) कानन जे० एस० वसन्त वेजेन्ट अभी हाल में आक्स फोर्ड के ईसाई सम्मेलन में जो भाषण दिया है, उसमें स्वर्ग नरक की कल्पना के सम्बन्ध में बोलते हुए आपने कहा है।

कलकत्ता से प्रकाशित है रल्ड अपने २८ अगस्त १९५५ ई० के प्रकाशन में लिखते है :—

(क) नरक की आग और मृत्यु के बाद की नरक की यातनाओं सम्बन्धी पुराने विचारों के बारे में यही कहा जा सकता है कि यह विकार ग्रस्त मस्तिष्कों की उपज है।

(ख) उन चौंका देनेवाले स्वप्नो का जो नरक के भयानक चित्र प्रस्तुत करते हैं जब तक उनके पीछे गम्भीर मनोवैज्ञानिक कारण न हो कोई मूल्य नहीं आंका जा सकता।

(ग) स्वर्ग सम्बन्धी परम्परा गत तर्क मूल्य कल्पना सर्वथा अवाञ्छनीय है। मध्यकालिन कथालिक सुधार वादी प्रोटेस्टेवे को अपनी अपनी मान्यताओं के आधार पर मरणोपरान्त की परिस्थिति स्वतन्त्र बिचारों का एक उड़ान मात्र है।

(घ) जिस काल्पनिक रूप में मरणोपरान्त की स्थिति का चित्रण किया गया है, उसने इसको पूर्ण रूपेण वास्तविकता शून्य बना दिया है। नरक अपमान कारक है तो स्वर्ग एक अना वश्यक बोझा है।

(ङ) यह स्पष्ट रूप में स्वीकार करने में कोई दोष नहीं है कि हम ईसाई जीवन तथा मृत्यु के सम्बन्ध में पत्ते पर रेंगने वाली कीड़े के बच्चे की उड़ने सम्बन्धी ज्ञान से अधिक कुछ नहीं जानते।

(२) राइट आनरेबल रिचर्ड लेलर शील लिखते हे :— — — —
बाईबल बहुत से हिस्से ऐसे जोरदार तौर पर ऐसे वेवर्द तरीके पर लिखे गये हैं कि वे बेतहासा पढ़े जाने के हरगिज लायक नहीं है। एहर अतीक पुराने के बाज हिस्सो में की एक ऐसी खुली तस्बीर खींची गई है कि किसी नौजवान औरत को उन हिस्सों पर गौर की इजाजत नही होनी चाहिये।

(३) सुप्रीम कोर्ट आफ बिक्टोरिया के जज जास्टिस हण्डली बिलियम साहब लिखते है..... मैं बिना खौफ तरदीर कर सकता हूँ कि आज तक किसी अंग्रेज मुन्सिफ ने इस फौहस का दशवा हिस्सा भी अपनी किसी फौहस किताब में नहीं लिखा, जो कि एहद अतीक में देखा जाता है। यहद अतीक का एक बड़ा भारी हिस्सा खुंखार वेरहमी और वह शियाना ख्याल से भरा पड़ा है।

(४) अमेरिका के पादरी हैनरी वार्डर वीचर साहब की राय है कि बाईवल को हरगिज नौजवान औरतों के हाथ नहीं देना चाहिये।

(५) रेवरेण्ड केननरिचर्ड साहब लिखते है कि "अगर तुमको बच्चों के एखलाक का बचाव मंजूर है तो खुदा के वास्ते उनके हाथों में अहद अतीक मत दो।"

(६) रैनक साहल अपनी पुस्तक "पोप औफ रोम,, प्रथम जिल्द पृष्ट ५०५ में लिखते है— "बाईबल की बहुत सी किताबों की फहरिस्त तैयार की गई थी और फिर उनको एक बड़े ढेर में जमा करके आग लगा दी गई, ये किताब कई दिनों तक जलती रही।— — पृ० १६० में..... ... ...न सिर्फ छापने और बेचने वालों को ही बाईबल की ममनुअ किताबों के छापने से कानून मना कर दिया था बल्कि सबको हुक्म था कि इस किस्म की किताबों को जलाने में मदद दे, चूनाचे इन किताबों के ढेर के ढेर रोम में जलाकर तबाह कर दिये गये।

(७) कोस्टर साहब लिखते है— खुदा का कलाम अगर किताब में न आता तो बहुत अच्छा होता मगर वकौल मुर्दा बोले कफन फाड़े इस के लिखे जाने से सब भेद खुल गया ।

(८) लन्दी नए साहब लिखते है " बाईबल मोम की नाक है जिधर चाहे फेर लो यह एक मुर्दा है महज मुसा है मग्जन दारद है एक मुर्दा कानन है। बाईबल मुलहिदों का स्कूल है एक जंगल है जिसमें ..... पताह गुज्ज है।

(९) पोप एन सेष्ट ग्याहरवें ने सन् १६८७ ई० में हुक्म दे दिया था कि " जिस शक्स के पास बाईबल मौजूद हो वह उसको अपने नजदीक के पादरी को दे दे, ताकि वह उसको आग में जला दे,,

(१०) पोप लिक्मेस्ट तेरहवें ने हुक्म दे दिया था कि " जो कोई भी शक्स बाईबल का इतालो तर्जुमा पढेगा उसको काट मार दिया जायगा ।

(११) पोस पाइस आठवें ने सन् १०१६ ई० में कहा था कि "मैं इस बात को देखकर कांप रहा हूँ कि बाईबल चारो तरफ फैल रही है, बाईबल का इस तरह फैलना बड़ा भारी जुर्म है। इससे मजहब की असली बुनियाद कतई खोखली हो जायगी। यह एक प्लेग है जिसकी और वेखलनी करनी चाहिये, यह किसी रूह (आत्मा) के जारत करने के लिए एक निहायत ही खतरनाक जहर है।

(१२) लिपूत्रा रहवे ने सन् १८४४ ई० में एक एलान जारी किया था, जिसमें इस बात को ताकीद की गई थी कि बाईबल सोसाइटि जहाँ-जहाँ हो, जबरन् बन्द की जाये इसके साथ ही उसमें यह भी हुक्म जारी किया गया था कि जिसके हाथ में बाईबल (हो) नजर आवे उससे छीन लो।

(१३) श्याम के रोमन कैथोलिक विशप डाक्टर हेल ने लार्ड जान सैल को यकिन दिलाया था कि "जहां तक हो सकेगा मै

स्कूलों में जिन पर मेरा एतकाद है बाईबल के जहरीले सब को नहीं होने दूगां ।

(१४) पादरी कन सल अपने "गौरेल रिकलैक्शन,, नामी पुस्तक में लिखा था "हरएक शक्स को चाहिये कि वह बाईबल रोज मुताअला करे क्योंकि इसमें रूहानिषन और षाकीज गी भरी हुई है, वगैरा, मगरक्लीमेष्ट ग्यारहवें ने कनसल के इन मुकद्रम करने के लिए जहरीले का बिल लाना और उसपर मुवा लगाना और मुलिह दाना ख्यालात लिखा है ।

इस प्रकार बहुतों की सम्मतिया है विस्तार भय से नहीं दिया जाता है। अतः सारे संसार के पादरी ईसाई लोग ऐसे अपवित्र गन्दी धर्म पुस्तक को छोड़कर सार्वभौम (सार्वजनिक) सार्व कालिक सार्वजनीन सर्वतन्त्र पवित्र वैदिक धर्म की शरण में आकर अपने जीवन को सफल बनावें ।

१ २ ३ ४

विश्वं सुभूतं सुविदत्रं न अस्तु (अथर्व १-३१-४)

अर्थात् हमारा सब [१] संसार प्रभुत [२] ऐश्वर्य सम्पन्न और उत्तम [३] ज्ञानी हो [४] ।

मैं तो सारा संसार को इस वेदाज्ञा के अनुसार ज्ञानी और ऐश्वर्य सम्पन्न देखना चाहता हूं । क्या बाईबल को पढकर कोई भी व्यक्ति ज्ञानी हो सकता है ? कभी नहीं ।

नेत्राचन्दनेत्राब्दे, आश्विनस्य सितेदले ।
पञ्चम्यां वासरे शुक्रे ग्रन्थः पूर्णमगादयत् ॥

आश्विन मास के पंचमी शुक्ल पक्ष के शुक्रवार सम्वत् २०१२ को यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ । (लेखक)

— ०:—

वेद का सन्देश

वेद कहता है--मनुर्भव-मनुष्य बन !

किन्तु आज का संसार ईसाई बनने पर बल देता है। इसी प्रकार एक भाग मुसलमान बनने का उपदेश देता है। किन्तु थोड़ा सा बिचार करें तो एक बिचित्र दृश्य सामनें आता है। ईसाई ने ईसा का नाम लेकर जो कुछ अपने भाइयों के साथ किया उसकी स्मृति ही मनुष्य को कंपा देती है। बिल्ली के बच्चे तक की रक्षा करने वाले मुहम्मद की उम्मत का इतिहास भी भाइयों के रक्त से रंजित है। आः ! जिसे मनुष्य कहते हैं वह मनुष्य का वैरी हो रहा है। अतः वेद कहता है- मनुर्भवः मनुष्य बनो ! ईसाई बनने से केवल ईसाईयों से प्रेम विशेष होगा। मुसलमान होकर केवल मोमिनो को ही प्यार का अधिकारी मानूँगा। किन्तु मनुष्य बनने पर तो विश्व (संसार) मेरा परिवार होगा, सब पर समान रूप से प्यार होगा किसी प्रकार भेद भाव नहीं रहेगा।

प्रभु हमारे माता पिता, हम उनकी सन्तान किन्तु कुसन्तान जधन्य सन्तान, अयोग्य सन्तान, विद्रोही सन्तान। हम आपस में लड़ते झगड़ते हैं यह भाई-भाई की लड़ाई ! भगवान् ने कहा था "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनानसि जानताम्" (ऋग्वेद १०। १९१।२) तुम्हारी चाल एक हो, तुम्हारा बोल एक हो, तुम्हारा बिचार एक हो। किन्तु आज हमारी चाल भिन्न २ ही नहीं परस्पर विरूद्ध भी है। आज हम संवादी नहीं विवादी हो गये। एक चाल (संगति) एक बोल उक्ति) के लिए मन की एकता बिचार समता की आवश्यकता है। पिता का आदेश है, माता का सन्देश है "संगच्छध्वम्·····" हम उसके विपरीत चल कर पिता का अधिकार माता का प्यार कैसे पा सकते हैं ?

आर्य-समाज वेद का पावन सन्देश घर २ पहुंचाना चाहता है इसलिये यह समय समय पर वेद कथा, वेद प्रवचन द्वारा मानव का वास्तविक कर्त्तव्य पर प्रकाश डालता रहा है।

पं० गोबिन्द प्रसाद आर्य (विद्या वारिधि)

भजन

मसीही भाईयो ! जरातो सोचो, खुदा के अपने तुम कारनामे।
साफ साबित है इंजिल से यह, कि गर्भ मरियम रहा खुदा से ॥१॥

इलशिवा राखिल और सारा, को इसी तरह सुत दिये खुदा ने।
परस्त्रीगामी हैं जाते दोजख यह शिक्षा बाइबिल है साफ देती ॥२॥

परस्त्रीगामी खुदा हुआ जब, तब नर्क जाने में शक न आवे।
उधर हो मुक्ति का ठेका लेते, खुदा को दोजख में हो डुबोते ॥३॥

रहम न खाते मसीही भाइयों,
खुदा को दोजख से तुम निकालो।

किन्हीं ने पुरुषों के संग किन्हें, लूत ने कन्याओं को पुत्र दीन्हें।
अमराम ने निज बुआ व्याहा, हारुन मुसा दो पुत्र जाये ॥५॥

दाउद के पुत्र अमनून ने भी, तमर निज भगिनी पर मन लगाया।
पकड़ के बरबस अकर्म कीन्हा, है शर्म आती बताओ प्यारे ॥६॥

यहूदाह ने निज पुत्र वधू से, किया मुंह काला ए लाठी देके।
मसीही भाइयो जरा तो बोलो, हो कैसी उत्तम तुम शिक्षावाले ॥७॥

मसीही भाइयो को दी है आज्ञा,
मसीही खुदाने यह कैसी उत्तम।

जरा तो आँख खोल के विचारो, ऐसी ही शिक्षा भरी है उसमें।
अब भी तो उससे मुंह मोरो वैदिक धर्म की शरण में आओ ॥९॥

—स्वामी शिवानन्द तीर्थ, आचार्य शान्ति आश्रम (लोहरदगा)

ओ३म्

आर्य समाज के नियम और उद्देश्य

१ सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाते है उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२ ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्रऔर सृष्टी कर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३ वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।

४ सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५ सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को बिचार करके करने चाहिये।

६ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७ सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य वर्तना चाहिये।

८ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किंतु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१० सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

5284

मुद्रित— श्री हलधर प्रेस, कचहरी रोड, राँची